The Ved Science Publication

द वेद साइंस पब्लिकेशन का उद्देश्य प्राचीन वैदिक ज्ञान-विज्ञान को संसार के सम्मुख प्रस्तुत करना है। हम वेद और ब्राह्मण आदि आर्ष ग्रन्थों पर आधारित पुस्तकों का प्रकाशन व विक्रय करते हैं। यह प्रकाशन वैदिक और आधुनिक विज्ञान के बीच सेतु बनने का प्रयास कर रहा है। यहाँ से प्रकाशित पुस्तकें वैदिक विज्ञान, वैदिक संस्कृति की वैज्ञानिकता और प्राचीन सृष्टि-विज्ञान को सरल भाषा में समझाती हैं। संस्था का लक्ष्य है कि वैदिक विज्ञान आम पाठकों, शोधार्थियों और जिज्ञासुओं के लिए सुलभ हो सके।

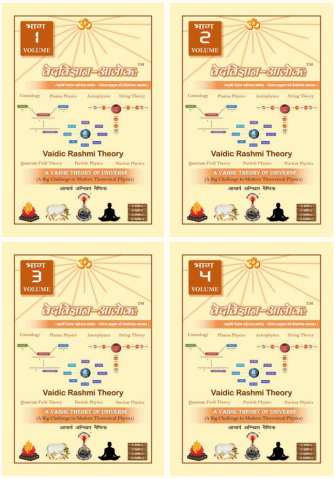

वेदविज्ञान-आलोकः (महर्षि ऐतरेय महीदास प्रणीत - ऐतरेय ब्राह्मण की वैज्ञानिक व्याख्या)

आचार्य अग्निव्रत

Pages 2800 | MRP 20000 | Edition 1st, 2018 | Language Hindi | Binding Hardback | Weight 11500g

यह आचार्य अग्निव्रत जी द्वारा रचित एक अद्वितीय एवं क्रान्तिकारी ग्रन्थ है। ऐतरेय ब्राह्मण का विश्व में प्रथम बार वैज्ञानिक भाष्य प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रन्थ वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों की जटिल व सांकेतिक भाषा को आधुनिक सैद्धान्तिक भौतिकी के आलोक में स्पष्ट करता है। स्पेस, टाइम, मूल कण, फोटोन, डार्क मैटर, डार्क एनर्जी, गुरुत्वाकर्षण, ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और सृष्टि-क्रियाविज्ञान जैसे गूढ़ विषयों का इसमें तर्कसंगत समाधान दिया गया है। ग्रन्थ यह सिद्ध करता है कि सृष्टि वैदिक ऋचाओं के सूक्ष्म कम्पनों से निर्मित है। साथ ही इसमें ईश्वर के अस्तित्व, सृष्टि-रचना, यज्ञ परम्परा और वैदिक विज्ञान के समन्वय को वैज्ञानिक दृष्टि से समझाया गया है। यह कृति वैदिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान से जोड़कर मानवता के लिए नई दिशा प्रदान करती है, साथ ही लगभग १००-२०० वर्षों तक अनुसंधान के लिये सामग्री भी प्रदान करती है।

वेदार्थ-विज्ञानम् (महर्षि यास्क विरचित निरुक्त की वैज्ञानिक व्याख्या)

आचार्य अग्निव्रत

Pages 2070 | MRP 6000 | Edition 1st, 2024 | Language Hindi | Binding Hardback | Weight 5200g

यह पुस्तक वेदों के वास्तविक, वैज्ञानिक और मौलिक स्वरूप को समझाने का एक गम्भीर प्रयास है। इसमें यह प्रतिपादित किया गया है कि वेद केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं, बल्कि ब्रह्माण्डीय विज्ञान के गूढ़ रहस्यों का स्रोत है। महर्षि यास्क के निघण्टु और निरुक्त को आधार बनाकर आचार्य अग्निव्रत जी ने वैदिक पदों के अर्थों की गहराई में जाकर यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक वैदिक शब्द अपने भीतर सृष्टि-विज्ञान समेटे हुए है। यह ग्रन्थ प्रचलित निरुक्त भाष्यों में आई विकृतियों, भ्रान्त व्याख्याओं और सांस्कृतिक पतन पर भी सशक्त प्रश्न उठाता है। 'वेदार्थ-विज्ञानम्' यह सिद्ध करता है कि केवल व्याकरण से नहीं, बल्कि निरुक्त के निर्वचन विज्ञान से ही शुद्ध वेदार्थ सम्भव है। गुरुकुलों, विद्वानों और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि वाले पाठकों के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी एवं प्रेरक सिद्ध होता है।

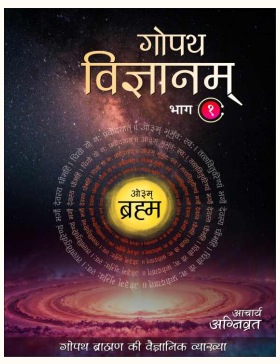

गोपथ विज्ञानम् भाग-१

आचार्य अग्निव्रत

Pages 230 | MRP 550 | Edition 1st, 2025 | Language Hindi | Binding Paperback | Weight 470g

यह ग्रन्थ गोपथ ब्राह्मण के प्रथम प्रपाठक के वैज्ञानिक, सूक्ष्म और गम्भीर रहस्यों को उद्घाटित करता है। इसमें सृष्टि उत्पत्ति के प्रारम्भिक चरणों का विश्लेषण है कि परमात्मा प्रकृति से सृष्टि का निर्माण कैसे करता है और 'ओ३म्' पद का वैज्ञानिक रहस्य क्या है। इसमें गायत्री मन्त्र के दुर्लभ उद्धरणों और वेदाध्ययन के लिए आवश्यक तप-प्रक्रिया पर भी प्रकाश डाला गया है। उच्च वैज्ञानिक चिन्तन वाले सभी व्यक्तियों एवं वैदिक विद्वानों के लिए यह विशेष रूप से आवश्यक और ज्ञानवर्धक है।

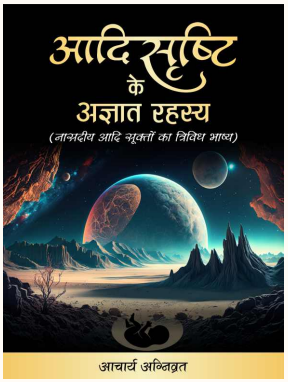

आदिसृष्टि के अज्ञात रहस्य

आचार्य अग्निव्रत

Pages 168 | MRP 450 | Edition 1st, 2025 | Language Hindi/English | Binding Paperback | Weight 360g

वेदों में सृष्टि का सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान निहित है। इस पुस्तक में ऋग्वेद के नासदीय आदि सूक्तों के मन्त्रों के आधार पर सृष्टि-उत्पत्ति का एक ऐसा सिद्धान्त प्रस्तुत है, जो अन्य सिद्धान्तों से अधिक तर्कसंगत और वैज्ञानिक है। इसमें मानव और अन्य प्राणियों के जन्म, विकास और अवस्था से जुड़े गम्भीर प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं। वेद का यह ज्ञान मानव की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है और इसका सुन्दर व संक्षिप्त वर्णन इस पुस्तक में मिलता है। यह पुस्तक उच्चकोटि के वैज्ञानिकों से लेकर जिज्ञासु युवाओं तक सभी के लिए विशेष ज्ञानवर्धक है।

वैदिक रश्मिविज्ञानम्

आचार्य अग्निव्रत

Pages 338 | MRP 600 | Edition 1st, 2024 | Language Hindi | Binding Paperback | Weight 640g

यह पुस्तक वेदों के वास्तविक स्वरूप, उनकी अपौरुषेयता और सर्वविज्ञानमय स्वरूप को वैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत करती है। लेखक आर्ष ग्रन्थों के भ्रान्त अर्थों, कर्मकाण्डीय विकृतियों और नास्तिक धाराओं के प्रभाव का सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए ऋषि दयानन्द सरस्वती के वैदिक दृष्टिकोण को केन्द्र में रखते हैं। ग्रन्थ में प्रतिपादित वैदिक रश्मि सिद्धान्त के माध्यम से सृष्टि, चेतना और पदार्थ की वैज्ञानिक व्याख्या की गई है। यह कृति वेदों को केवल आस्था नहीं, बल्कि उच्च कोटि का सार्वभौमिक विज्ञान सिद्ध करने का सशक्त प्रयास है।

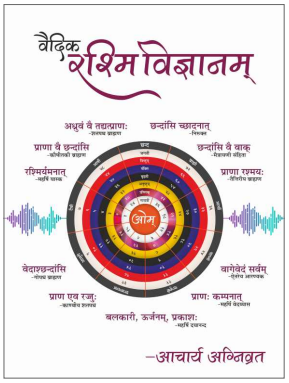

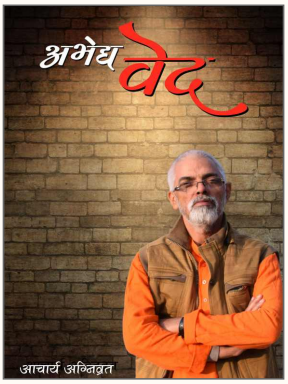

अभेद्य वेद

आचार्य अग्निव्रत

Pages 224 | MRP 450 | Edition 1st, 2024 | Language Hindi | Binding Paperback | Weight 300g

इस पुस्तक में वेदों पर किए गए गम्भीर और पूर्वाग्रहपूर्ण आक्षेपों का तर्कपूर्ण उत्तर दिया गया है। आचार्यश्री ने सार्वजनिक रूप से वेदविरोधियों को चुनौती देकर प्राप्त हुए आक्षेपों का उत्तर देने का दायित्व स्वयं निभाया, जबकि देश के प्रतिष्ठित शंकराचार्य, महा-मंडलेश्वर और वैदिक विद्वान् मौन रहे। इसमें यह प्रतिपादित किया गया है कि वेद में पशुहिंसा व मांसाहार नहीं, बल्कि भाष्यकारों की त्रुटियों के कारण भ्रम उत्पन्न हुआ है। यह पुस्तक वेदार्थ की पद्धति और उसमें ब्राह्मण ग्रन्थों व निरुक्त की भूमिका तथा वैदिक शब्दों के वैज्ञानिक अर्थ को विस्तार से प्रस्तुत करती है।

बोलो! किधर जाओगे?

आचार्य अग्निव्रत

Pages 224 | MRP 200 | Edition 1st, 2nd, 2018 | Language Hindi | Binding Paperback | Weight 80g

यह पुस्तक मानव समाज की मूल एकता, धर्म के वास्तविक स्वरूप और वैदिक दृष्टिकोण को गहन तर्कों और प्रमाणों सहित प्रस्तुत करती है। आचार्य जी ने जाति, सम्प्रदाय, मजहब और भौतिकवाद से उत्पन्न विघटन का विवेचन करते हुए धर्म को मानवमात्र के कल्याण से जोड़ा है तथा यह स्पष्ट किया है कि धर्म कोई पन्थ नहीं, बल्कि सत्य, न्याय और संवेदनशील आचरण है। वैदिक साहित्य के आलोक में लेखक समाज, राष्ट्र और विज्ञान के समन्वय की दिशा दिखाते हैं। यह पुस्तक विचारशील पाठकों को आत्ममन्थन और सही दिशा चुनने के लिए प्रेरित करती है।

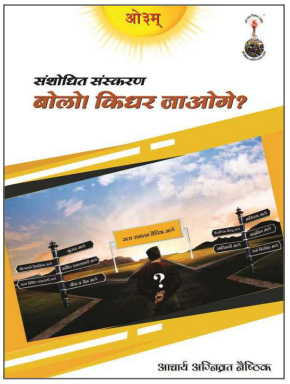

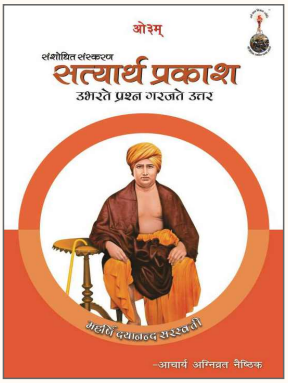

सत्यार्थ प्रकाश (उभरते प्रश्न गरजते उत्तर)

आचार्य अग्निव्रत

Pages 82 | MRP 100 | Edition 2nd, 2018 | Language Hindi | Binding Paperback | Weight 300g

यह पुस्तक एक विचारोत्तेजक एवं विवेचनात्मक कृति है, जो सत्यार्थप्रकाश से जुड़े समकालीन प्रश्नों का तार्किक, व्यावहारिक और वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करती है। पुस्तक में नियोग, धाय, सृष्टि-उत्पत्ति, शूद्र-वर्ण, मूर्तिपूजा, आहार-विहार, धरती पर मानव की उत्पत्ति तथा सूर्य में प्राणियों की सम्भावना जैसे जटिल विषयों पर शास्त्रीय और तर्कसंगत दृष्टि से विचार किया गया है। यह ग्रन्थ ऋषि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए आधुनिक सन्दर्भ में उठी शंकाओं का सन्तुलित समाधान देता है और गम्भीर पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

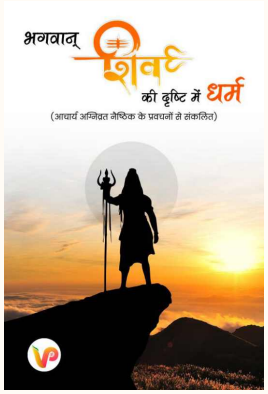

भगवान् शिव की दृष्टि में धर्म

आचार्य अग्निव्रत

Pages	MRP	Edition	Language	Binding	Weight
132	250	1st, 2022	Hindi	Paperback	170g

यह पुस्तक भगवान् महादेव शिव को एक काल्पनिक देवता नहीं, बल्कि महाभारत के अनुशासन पर्व के एक श्लोक के आधार पर एक ऐतिहासिक, तपस्वी, महान् वैज्ञानिक और महान् योगी के रूप में प्रस्तुत करती है। इसके साथ ही भगवान् शिव की दृष्टि में धर्म के यथार्थ स्वरूप को प्रस्तुत करती है। इसमें अहिंसा, सत्य, दया, शम और दान की प्रमाणपूर्वक व दृष्टान्तसहित व्याख्या की गई है। यह पुस्तक सच्ची शिवभक्ति, धर्म और आत्मचिन्तन की प्रेरणा देती है।

ईश्वर का प्रथम उपदेश यही क्यों ?

आचार्य अग्निव्रत

Pages	MRP	Edition	Language	Binding	Weight
134	250	1st, 2022	Hindi	Paperback	180g

इस पुस्तक में ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र "अग्निमीळे पुरोहितं..." का आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक तीनों प्रकार का भाष्य प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक वेदभाष्य की लुप्तप्राय शैली को पुनर्जीवित करते हुए सृष्टि, समाज और आत्मबोध के मूल प्रश्नों पर स्पष्ट, तर्कपूर्ण और प्रेरक दृष्टि प्रदान करती है। यह पुस्तक वेद को केवल धर्मग्रन्थ नहीं, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के ज्ञान-विज्ञान का मूल स्रोत सिद्ध करती है। पुस्तक के अन्त में प्रबुद्ध श्रोताओं की अनेक शंकाओं का समाधान किया गया है।

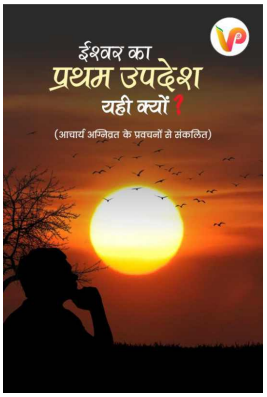

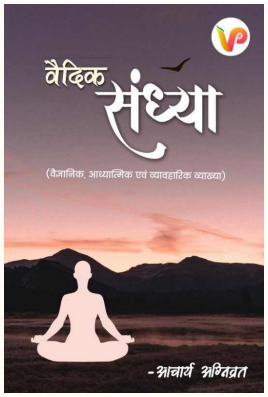

वैदिक संध्या

आचार्य अग्निव्रत

Pages	MRP	Edition	Language	Binding	Weight
102	200	1st, 2022	Hindi	Paperback	140g

यह पुस्तक वैदिक परम्परा में संध्योपासना के स्वरूप, अर्थ और महत्त्व को गहराई से समझाने वाली एक प्रामाणिक कृति है। ईश्वर ने सृष्टि की रचना जीवात्मा के कल्याण के लिए की और मानव का कर्त्तव्य कृतज्ञता व्यक्त करना है। संध्या को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का मूल वैदिक मार्ग बताया गया है। ग्रन्थ की विशेषता संध्या मन्त्रों का त्रिविध भाष्य है, जिसमें आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक व्याख्या दी गई है। यह पुस्तक संध्या को अर्थपूर्ण, वैज्ञानिक और भावपूर्ण बनाने में सहायक है।

जातिवाद और भगवान् मनु

आचार्य अग्निव्रत

Pages	MRP	Edition	Language	Binding	Weight
61	120	1st, 2022	Hindi	Paperback	100g

यह पुस्तक भारतीय समाज की एक गम्भीर समस्या जातिवाद का वैदिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक समाधान प्रस्तुत करती है। इसमें भगवान् मनु द्वारा प्रतिपादित कर्म और योग्यता पर आधारित वर्ण-व्यवस्था के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट किया गया है, जिसे समय के साथ विकृत कर दिया गया। 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्...' वेद-मन्त्र का यथार्थ अर्थ प्रस्तुत करते हुए मिथ्या प्रचार से उत्पन्न भ्रान्तियों का खण्डन किया गया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के भाष्य के आलोक में वर्ण-व्यवस्था पर उठने वाली शंकाओं का समाधान किया गया है।

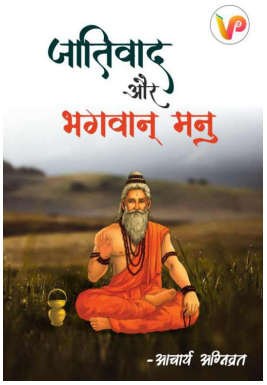

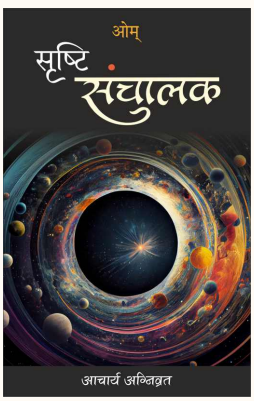

सृष्टि संचालक

आचार्य अग्निव्रत

Pages	MRP	Edition	Language	Binding	Weight
70	120	1st, 2024	Hindi	Paperback	100g

यह पुस्तक ईश्वर तत्त्व और धर्म की अवधारणा को वैदिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक दृष्टि से स्पष्ट करती है। महाभारत काल के बाद वैदिक सत्य के पतन से अनेक मत-मतान्तर, कल्पित ईश्वर और विकृत आस्थाएँ जन्मीं, जिनसे मानवता खण्डित हुई। यह पुस्तक नास्तिक मतों, पौराणिक धारणाओं, कर्मकाण्ड, मूर्तिपूजा, कट्टरता और आधुनिक भोगवाद की गहन समीक्षा करती है। साथ ही यह दर्शाती है कि वर्तमान विज्ञान की चुनौती का सामना केवल सत्य सनातन वैदिक मत ही कर सकता है। यह कृति ईश्वर को आस्था नहीं, बल्कि विवेक और ज्ञान का विषय बताती है।

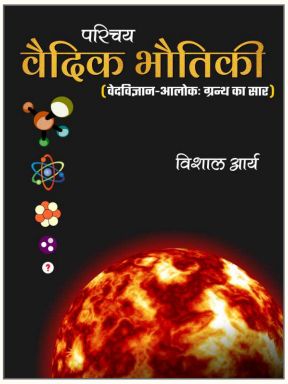

परिचय वैदिक भौतिकी

✍ विशाल आर्य

Pages	MRP	Edition	Language	Binding	Weight
182 178	600/700 800	1st, 2022	Hindi English	Paper/Hardback Hardback	480/580g 580g

'परिचय – वैदिक भौतिकी' आचार्य अग्निव्रत जी के ऐतरेय ब्राह्मण पर आधारित शोध को सरल और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक वेदों में निहित भौतिकी के मूल सिद्धान्तों को आधुनिक सन्दर्भ में समझाती है तथा आधुनिक विज्ञान के प्रचलित सिद्धान्तों पर वैचारिक विमर्श प्रस्तुत करती है। वैदिक रश्मि सिद्धान्त के माध्यम से यह ग्रन्थ सृष्टि, ऊर्जा, बलों और सूक्ष्म कणों की गहन व्याख्या करता है। छात्रों, शोधकर्ताओं और जिज्ञासु पाठकों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। यह वैदिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के मध्य सेतु का कार्य करती है।

वैदिक संस्कृति की वैज्ञानिकता

✍ डॉ. भूप सिंह

Pages	MRP	Edition	Language	Binding	Weight
660	1000	1st, 2024	Hindi	Paperback	1200g

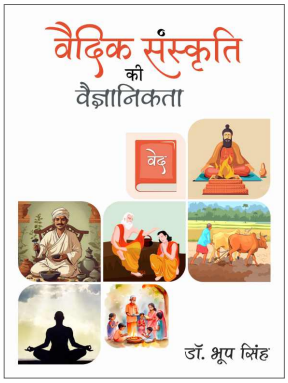

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। मानव परमात्मा की बनाई सृष्टि का भोग करते हुए चरम लक्ष्य अर्थात् मोक्ष को कैसे प्राप्त करे और मोक्ष प्राप्ति तक सुखी जीवन कैसे व्यतीत करे, यह मार्गदर्शन परमात्मा ने वेद के माध्यम से दिया। वेदानुकूल आचरण वैदिक संस्कृति का आधार है। हम वैदिक संस्कृति को जीवन में अपना पायें, इसके लिये आवश्यक है कि इस संस्कृति की मान्यताओं की स्पष्ट समझ हमारे पास हो। वैदिक संस्कृति के कुछ बिन्दुओं को समझाने का प्रयास प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है।

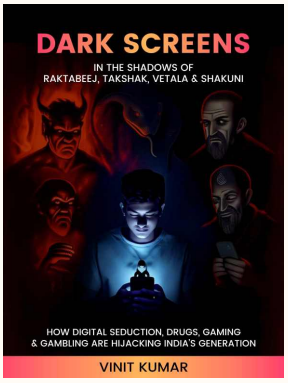

DARK SCREENS (IN THE SHADOWS OF RAKTABEEJ, TAKSHAK, VETALA & SHAKUNI)

✍ Vinit Kumar

Pages	MRP	Edition	Language	Binding	Weight
258	950	1st, 2025	English	Paperback	550g

From Curiosity to Commitment explores the hidden dangers of the digital age through the lens of a parent, learner, and researcher. What began as a casual study of cyber law grew into an urgent investigation of online addictions, digital crimes, and their devastating impact on youth. The book unravels four digital demons explicit content, online drugs, gaming addiction, and gambling using powerful mythological metaphors. Drawing on 200+ insights and 150+ real cases, it balances warnings with solutions for families, educators, policymakers, and society. More than an alarm, it is a roadmap for awareness, resilience, and reform in a world where myths guide us to liberation, not fear.

भ्रष्टाचार से जंग (जंगल की नीति)

✍ विनीत कुमार

Pages	MRP	Edition	Language	Binding	Weight
100	220	1st, 2025	Hindi/English	Paperback	300g

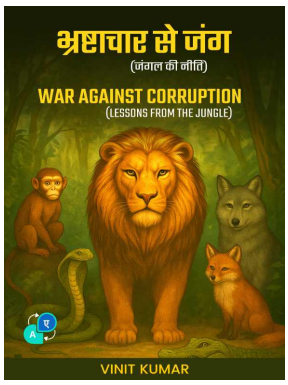

सरल और कल्पनाशील शैली में कही गई ये 25 कहानियाँ दिखाती हैं कि भ्रष्टाचार कैसे चुपचाप हमारे जीवन में प्रवेश करता है। हर कहानी मनोरंजन के साथ यह सोचने पर मजबूर करती है कि सही क्या है और आवश्यक क्या। यह संग्रह नई पीढ़ी को भ्रष्टाचार के विभिन्न रूपों के प्रति जागरूक बनाता है। जानवरों के माध्यम से यह विषय रोचक भी बनता है और प्रभावशाली भी। वयस्क पाठक इसमें अपनी ही दुनिया की झलक देखेंगे। पंचतन्त्र से प्रेरित ये कहानियाँ आज के समय के अनुरूप हैं। हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में लिखी यह पुस्तक याद दिलाती है कि ईमानदारी हर युग और हर भाषा में समान रूप से मूल्यवान है।

नोट— सभी पुस्तकों पर छूट उपलब्ध है।

प्रकाशक

द वेद साइंस पब्लिकेशन

वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल, जिला - जालोर (राजस्थान) - 343029

+919530363300 thevedscience.com

ORDER NOW
THEVEDSCIENCE.COM